१२. गजलें

(पूरक पठन)

– *अदम गोंडवी*

दिल के सूरज को, सलीबों पे चढ़ाने वालो ।
रात ढल जाएगी, इक रोज जमाने वालो ।

मैं तो खुशबू हूँ, किसी फूल में बस जाऊँगा,
तुम कहाँ जाओगे काँटों के बिछाने वालो ।

मैं उसूलों के उजालों में रहा करता हूँ,
सोच लो मेरी तरफ लौट के आने वालो ।

उँगलियाँ तुमपे उठाएगी ये दुनिया इक दिन,
अपने 'बेदिल' से नजर फेर के जाने वालो ।

× × ×   × × ×

जहाँ पर भाईयों में प्यार का सागर नहीं होता ,
वो ईंटों का मकाँ होता है, लेकिन घर नहीं होता ।

जो अपने देश पर कटने का जज्बा ही न रखता हो,
वो चाहे कुछ भी हो सकता है, लेकिन सर नहीं होता ।

जो समझौते की बातें हैं, खुले दिल से ही होती हैं,
जो हम मिलते हैं उनसे, हाथ में खंजर नहीं होता ।

हकीकत और होती है, नजर कुछ और आता है,
जहाँ पर फूल खिलते हैं, वहाँ पत्थर नहीं होता ।

परिचय

जन्म : १९४६, गोंडा (उ.प्र.)
मृत्यु : २०११
परिचय : अदम गोंडवी जी का मूल नाम रामनाथ सिंह है । आप आम आदमी के शायर थे । गाँव-देहात, शोषित आपकी गजलों में दिखाई पड़ते हैं । व्यवस्था पर कटाक्ष आपकी रचनाओं का एक और प्रमुख पक्ष है । आपकी साहित्यिक भाषा सरल और सीधे प्रभावित करने वाली है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'धरती की सतह पर' 'समय से मुठभेड़' (कविता संग्रह) ।

जो एक सीमा में रहकर रोशनी देता है 'बेदिल' को,
वो जुगनू हो तो हो, लेकिन कभी दिनकर नहीं होता ।

× × × × × ×

एक कदम चलते हैं, और चल के ठहर जाते हैं,
हम तो अब वक्त की आहट से भी डर जाते हैं ।

जो भी इस आग के दरिया में उतर जाते हैं,
वही तपते हुए सोने-से निखर जाते हैं ।

भीड़ के साथ चले हैं, वो उधर जाते हैं,
हम तो खुद राह बनाते हैं, इधर जाते हैं ।

मेरी कश्ती का खिवैया है, मुहाफिज तू है,
कितने आते हैं यहाँ, कितने भँवर जाते हैं ।

जब भी आते हैं मेरी आँख में आँसू 'बेदिल',
जख्म सीने के मेरे, और निखर जाते हैं ।

— ० —

पद्‌य संबंधी

यहाँ दी गई दोनों गजलों में गजलकार अदम गोंडवी जी ने अलग-अलग भावों को अभिव्यक्ति दी है । इन गजलों में गजलकार ने आपसी भाईचारा बढ़ाने, देश पर निछावर होने, 'एकला चलो' की भावना आदि को बड़े सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है ।

शब्द संसार

सलीब स्त्री.सं.(अ.) = सूली
उसूल पुं.सं.(अ.) = सिद्‌धांत, नियम
जज्बा पुं.सं.(अ.) = भाव, भावना
मुहाफिज वि.(अ.) = हिफाजत करने वाला, रक्षक

स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-**

(१) लिखिए :

१. कवि का बसेरा यहाँ है - __________

२. कवि यहाँ रहता है - __________

(२) कृति पूर्ण कीजिए :

कवि ने इन्हें सजग किया है

→ [ ] [ ]

(३) चौखट में दिए शब्दों की उचित जोड़ियाँ मिलाकर लिखिए :

कश्ती
आँख सोना
खिवैया प्यार उँगलियाँ
दुनिया जुगनू
रोशनी आँसू सागर
निखरना जज्बा

अ	आ
----------	----------
----------	----------
----------	----------
----------	----------
----------	----------

(४) वाक्य पूर्ण कीजिए :

१. घर वही होता है ....

२. हम उन्हीं से मिलते हैं ....

३. फूल यहीं खिलते हैं ....

४. जुगनू कभी यह नहीं बन पाता ....

(५) अंतिम दो पंक्तियों का भावार्थ लिखिए ।

(६) निम्न मुद्दों के आधार पर पद्य विश्लेषण कीजिए :

१. रचना का नाम

२. रचनाकार की विधा

३. पसंदीदा पंक्ति

४. पसंद होने का कारण

५. रचना से प्राप्त संदेश

उपयोजित लेखन

निम्न मुद्दों के आधार पर अपने विद्यालय में मनाए गए 'शिक्षक दिवस' समारोह का वृत्तांत लिखिए :

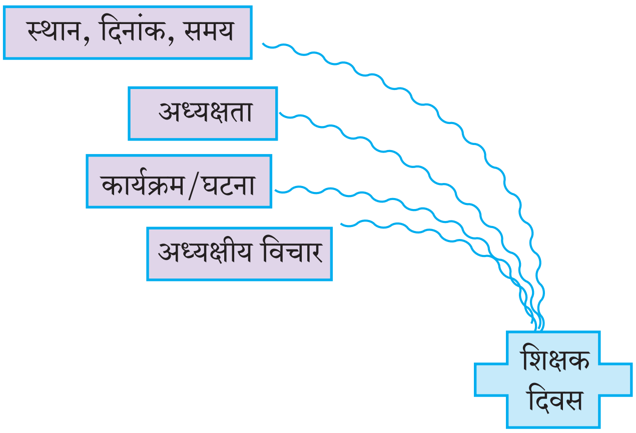

7GK6TX

भाषा बिंदु

दोहा, चौपाई पढ़िए और समझिए :–

मात्रा की गणना पर आधारित छंद

दोहा

- अर्धसम मात्रिक छंद है ।
- इसमें चार चरण होते हैं ।
- प्रथम–तृतीय चरण में १३ मात्राएँ
- द्विवितीय–चतुर्थ चरण में ११ मात्राएँ

उदाहरण

श्री गुरु चरन सरोज रज, निजमन मुकुर सुधार
प्रथम चरण (१) द्विवितीय चरण (२)

बरनौं रघुवर विमल जस, जो दायक फल चार ।।
तृतीय चरण (३) चतुर्थ चरण (४)

प्रथम चरण

ऽ ।। ।।। ।ऽ। ।।
(१) श्री गुरुचरन सरोज रज } = १३ मात्राएँ
२ ११ १११ १२१ ११

द्विवितीय चरण

।। ।। ।।। ।ऽ।
(२) निज मन मुकुर सुधार । } = ११ मात्राएँ
११ ११ १११ १२१

तृतीय चरण

।।ऽ ।।।। ।।। ।।
(३) बरनौं रघुवर विमल जस } = १३ मात्राएँ
११२ ११११ १११ ११

चतुर्थ चरण

ऽ ऽ।। ।। ऽ।
(४) जो दायक फल चार । } = ११ मात्राएँ
२ २११ ११ २१

चौपाई

- यह सम मात्रिक छंद है ।
- इसमें चार चरण होते हैं ।
- प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ होती हैं ।
- पहले और दूसरे चरण तथा तीसरे और चौथे चरण की तुकें मिलती हैं ।

उदाहरण

नित नूतन मंगल पुरमाही । निमिष सरिस दिन–जामिनी जाहीं ।
प्रथम चरण (१) द्विवितीय चरण (२)

बड़े भोर भूपति मनिजागे । जाचक गुनगन गावन लागे ।।
तृतीय चरण (३) चतुर्थ चरण (४)

प्रथम चरण

।। ऽ।। ऽ।। ।। ऽऽ
(१) नित नूतन मंगल पुर माही । } = १६ मात्राएँ
११ २११ २११ ११ २२

द्विवितीय चरण

।।। ।।। ।। ऽ।। ऽऽ
(२) निमिष सरिस दिन जामिनि जाहीं । } = १६ मात्राएँ
१११ १११ ११ २११ २२

तृतीय चरण

।ऽ ऽ। ऽ।। ।। ऽऽ
(३) बड़े भोर भूपति मनि जागे । } = १६ मात्राएँ
१२ २१ २११ ११ २२

चतुर्थ चरण

ऽ।। ।।।। ऽ।। ऽऽ
(४) जाचक गुनगन गावत लागे । } = १६ मात्राएँ
२११ ११११ २११ २२